आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 3/सितंबर 2022
Received: 10/09/2022; Accepted: 13/09/2022; Reviewed: 20/09/2022; Published: 24/09/2022

हिंदी कविता और राष्ट्रीयता

- केसरबेन राजपुरोहित
अतिथि व्याख्याता
कालीकट विश्वविद्यालय
मो. 9207433926
ईमेल- kesarclt@gmail.com

केसरबेन राजपुरोहित, हिंदी कविता और राष्ट्रीयता, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 3/सितंबर 2022, (163-167)

राष्ट्रीयता का अर्थ राष्ट्र के नागरिकों में एक-दूसरे के प्रति एकता की भावना है। यह एक आंतरिक मनोभाव है। जिसमे देश के प्रति प्रेम, त्याग और समर्पण की भावना विद्यमान रहती है। समय आने पर अपने व्यक्तिगत स्वार्थ का त्याग करना और सामूहिक हितों के बारे मे सोचना ही सच्ची राष्ट्रीयता है। अपने देश की संस्कृति, सभ्यता, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक परिस्थितियों में सुधार की भावना में राष्ट्रीयता मुखरित होती है। जब हमारे देशवासी अंग्रेजों की गुलामी में कराह रहे थे तब हमारे राष्ट्रकवि स्वतंत्रता आंदोलन की लहर को दिल में लेकर चले जिससे जनता प्रेरित हुई और जन-जन में नवचेतना जागृत हुई।

नंदकिशोर नवल कहते है कि “मैंने बार-बार महसूस किया है कि राष्ट्रीयतावादी कवियों ने अपनी कविताएँ स्याही से न लिखकर अपने ह्रदय के रक्त से लिखी हैं और उनके माध्यम से एक तरफ़ जनता का सांस्कृतिक विकास किया है और दूसरी तरफ़ उसे स्वतंत्रता-संग्राम के लिए तैयार किया है” ‘स्वतंत्रता पुकारती’(पृष्ठ 18)

भारतेंदु युग में भारतेंदु हरिश्चंद्र, बदरीनारायण चौधरी ‘प्रेमधन’, प्रतापनारायण मिश्र, श्रीधर पाठक जैसे कवि हुए जिन्होंने अनेक देशभक्तिमूलक कविताओं की रचना की और जनता में अपने देश, अपनी भाषा के प्रति गौरव की भावना जगाने के प्रभावी प्रयत्न किए। अंग्रेजों के बढ़ते अत्याचारों से जनता को अवगत कराते हुए भारतेंदु कहते है –

“रोअहु सब मिलिकै आवहु भारत भाई।

हा हा! भारतदुर्दशा न देखी जाई।।" 'स्वतंत्रता पुकारती' (पृष्ठ 29)।

बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' ने 'क्षोभ' कविता के माध्यम से देशवासियों को आलस और हठ का त्याग कर देश की वर्तमान दशा पर विचार करने के लिए जनता को प्रेरित किया-

"है कैसी कजरी यह भाई? भारत अम्बर ऊपर छाई।।

मूरखता, आलस, हठ के धन मिलि मिलि कुमति घटा घिरि आई।" 'स्वतंत्रता पुकारती' (पृष्ठ 44)

प्रतापनारायण मिश्र देश में व्याप्त अंधविश्वास, कुरीतियों के प्रति जनता को सचेत करते हुए कहते है –

"विधवा बिलपैं नित धेनु कटैं कोऊ लागत हाय गुहार नहीं।"'स्वतंत्रता पुकारती' (पृष्ठ 55)

श्रीधर पाठक ने देशवासियों में स्वाभिमान की भावना जगाकर स्वदेश के प्रति प्रेम, अभिमान और कर्तव्यों को जगाने का प्रबल प्रयास किया-

"प्रेम-सहित प्रत्येक वस्तु को जब तक नहिं अपनाओगे
समता-युत सर्वत्र देश में ममता-मति न जगाओगे
जब तक प्रिय स्वदेश को अपना इष्ट-देव न बनाओगे
उसके धूलि-कणों में आत्मा को समूल न मिलाओगे
पूत पवन जल भूमि व्योम पर प्रेम-दृष्टि नहिं डालोगे
हो अनन्य-मन प्रेम-प्रतिज्ञा-पालन-व्रत नहिं पालोगे
तन मन धन जन प्रान देश-जीवन के साथ न सानोगे
स्वोपयुक्त विज्ञान ज्ञान का सुखद वितान न तानोगे
तब तक क्योंकर देश तुम्हारा निज स्वदेश हो सकता है
स्वत्व उसी का रह सकता है रख उसको जो सकता है।" 'स्वतंत्रता पुकारती' (पृष्ठ 66)

गांधीजी ने जिस राष्ट्रीय भावना का संचार किया था उसमें विश्वबंधुत्व की भावना विद्यमान थी। राष्ट्रकवियों ने आगे चलकर उसी भावना को जनता के दिलों मे जगाया। उन्होंने समझाया कि ब्रिटिश हुकूमत से लडने के लिए शारीरिक बल या हथियारों की आवश्यकता नहीं बल्कि मजबूत इरादों और पक्के हौंसलों की जरुरत है।

गांधीजी ने मैथिलीशरण गुप्तजी को राष्ट्रकवि अभिधा से सुशोभित किया था। गुप्तजी की रचनाओं में भारत के गौरवशाली इतिहास के गुणगान है। अपनी राष्ट्रीयता और संस्कृति के प्रति गौरव है। जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान होते है। 'मातृभूमि' कविता में गुप्तजी ने भारतमाता का गौरवगान किया है-

"क्षमामयी, तू दयामयी है, क्षेममयी है,

सुधामयी, वात्सल्यमयी, तू प्रेममयी है;

विभवशालिनी, विश्वपालिनी, दुखहर्त्री है,
भयनिवारिणी, शान्तिकारिणी, सुखकर्त्री है;
हे शरणदायिनी देवि, तू करती सबका त्राण है।
हे मातृभूमि, सन्तान हम, तू जननी, तू प्राण है।।“ ‘स्वतंत्रता पुकारती’ (पृष्ठ 121)

‘एक भारतीय आत्मा’ के उपनाम से कविता लिखनेवाले माखनलाल चतुर्वेदी जी की रचनाओं मे देशप्रेम और आत्मोत्सर्ग की उत्कट भावना मुखरित होती है। ‘पुष्प की अभिलाषा’ कविता मे पुष्प सुरबाला के गहने बनकर सुशोभित नहीं होना चाहता, ना ही प्रेमिका के गले का हार बनना चाहता है, ना ही सम्राटों के शव पर डाला जाना चाहता है, पुष्प देवताओं के सिर पर चढ़कर भाग्य पर इठलाना भी नही चाहता। वह माली से कहता है कि उसे मातृभूमि के लिए बलिदान करने के लिए जानेवाले वीरों के पथ में फेंका जाए ताकि उन बलिदानी वीरों के पैरों तले कुचलकर वह भी गर्व का अनुभव कर सके -

“मुझे तोड़ लेना वनमाली।उस पथ में देना तुम फेंक।।

मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने। जिस पथ जावें वीर अनेक।।“ ‘स्वतंत्रता पुकारती’ (पृष्ठ 147)

‘सिपाही’ कविता मे राष्ट्रहित के लिए अपना जीवन न्यौछावर करनेवाले सिपाही के संघर्षरत जीवन के मनोभावों का वर्णन माखनलाल चतुर्वेदी जी ने बखूबी किया है। सिपाही के मन की बात -

“सिर पर प्रलय, नेत्र में मस्ती,
मुट्ठी में मनचाही,
लक्ष्य मात्र मेरा प्रियतम है,
मैं हूँ एक सिपाही।“ ‘स्वतंत्रता पुकारती’ (पृष्ठ 148)

राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के प्रमुख कवियों में बालकृष्ण शर्मा नवीन जी का भी उल्लेखनीय स्थान है। नवयुवकों में बदलाव की चेतना जागृत करने के लिए नवीन जी ने ‘विप्लव गायन’ कविता लिखी। जिसमे कवि पूर्ण जोश के साथ पुराने रीति-रिवाजों, मान्यताओं और रुढ़िवादी विचारधारा में बदलाव लाने की बात करते है-

“कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए” ‘स्वतंत्रता पुकारती’ (पृष्ठ 180)

‘अरे तुम हो काल के भी काल’ कविता में बालकृष्ण शर्मा नवीन जी युवकों को जीवन में आनेवाली असफलताओं का सामना हिम्मतपूर्वक बिना डरे करने का आह्वाहन करते है। कवि कहते है कि अगर आप में कोई कार्य करने की ज़िद है तो आप उसे जरुर सफलतापूर्वक करलोगे। आपको क्षणिक आतंक अर्थात् लक्ष्य तक पहुँचने के सफर में आनेवाली बाधाओं से डर ने की तनिक भी आवश्यकता नही -

“क्या बिगाड़ेगा तुम्हारा, यह क्षणिक आतंक?

क्या समझते हो कि होगे नष्ट तुम अकलंक?

यह निपट आतंक भी है भीति-ओत-प्रोत!

और तुम तुम हो चिरन्तन अभयता के स्त्रोत!!

एक क्षण को भी न सोचो कि तुम होगे नष्ट;

तुम अनश्वर हो तुम्हारा भाग्य है सुस्पष्ट!" 'स्वतंत्रता पुकारती' (पृष्ठ 197)

सुभद्राकुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी' कविता जो नारी शक्ति का प्रत्यक्ष उदाहरण है। एक भारतीय नारी की वीरता की गाथा जिस पर प्रत्येक भारतवासी को गर्व होना स्वाभाविक है-

"लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना ख़ूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार,
महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी
भी आराध्य भवानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।" 'स्वतंत्रता पुकारती' (पृष्ठ 199)

स्वतंत्रता पूर्व सुभद्राकुमारी चौहान ने 'राखी की चुनौती' कविता लिखी। जो देशप्रेम की भावना से ओतप्रोत थी। रेशम की डोरी से बनी राखी को कवयत्रि ने लोहे की हथकडी मानने का आह्वाहन किया क्योंकि स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने पर अंग्रोजों के हाथों पकडे जाना स्वाभाविक था। मातृभूमि के लिए बलिदान करनेवाले भाई पर गर्व करती हुई बहन कहती है-

"मेरा बन्धु माँ की पुकारों को सुनकर
के तैयार हो जेलख़ाने गया है।
छीनी हुई माँ की स्वाधिनता को
वह ज़ालिम के घर में से लाने गया है।।" 'स्वतंत्रता पुकारती' (पृष्ठ 204)

सियारामशरण गुप्त जी मातृभूमि का यशोगान करते हुए उसकी महिमा का वर्णन करते है-

"यह वसुधा सर्वोत्कृष्ट है,
क्यों न कहें फिर हम यही-
जय-जय भारततवासी कृती,
जय-जय-जय भारतमही।।" 'स्वतंत्रता पुकारती' (पृष्ठ 162)

रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं की मूल भूमि राष्ट्रीयता है। इन्हें 'युग चारण' और 'काल के चारण' की संज्ञाओं से अलंकृत किया गया है। 'दिल्ली' कविता में भारत की गुलामी की अवस्था का वर्णन कवि करते है। इसके दो महत्वपूर्ण पक्ष है। एक अंग्रेजों के अत्याचार। दूसरा अंग्रेजों के अत्याचारों और शोषण में पीसती भारतीय जनता। कवि दिल्ली के ऐश्वर्य का वर्णन करते है साथ ही दुखी, निर्बल, असहाय जनता की दीनदशा को देख उनका ह्रदय भर आता है-

"बिखरी लट, आँसू छलके हैं,
देख वन्दिनी है बिलखाती,
अश्रु पोंछने हम जाते हैं
दिल्ली! आह! कलम रुक जाती।" 'स्वतंत्रता पुकारती' (पृष्ठ 274)

रामधारी सिंह दिनकर की 15 अगस्त सन् 1947 को स्वतंत्रता के स्वागत में रचित कविता है 'अरुणोदय'। जिसमे कवि आज़ादी को चुनौती के रुप मे स्वीकार कर उसकी सदा रक्षा करने की बात करते है-

"आज़ादी नहीं, चुनौती है, यह बीड़ा कौन उठाएगा?
खुल गया द्वार, पर, कौन देश को मन्दिर तक पहुँचाएगा?
है कौन, हवा में जो उड़ते इन सपनों को साकार करे?
है कौन उद्यमी नर, जो इस खँडहर का जीर्णोद्धार करे?" 'स्वतंत्रता पुकारती' (पृष्ठ 288)

देश का गौरव भाषा है। जिस पर हर एक देशवासी को गर्व होना चाहिए। आज की वर्तमान स्थिति में हमें अपनी भाषा बोलने मे शर्म महसूस होती है। लेकिन अंग्रेजी बोलने में गर्व महसूस होता है। आज-कल माता-पिता अपने बच्चों को अंग्रेजी मिडियम स्कूल में ही पढ़ाना चाहते है। भले ही घर मे किसी को अंग्रेजी न आती हो क्योंकि उन्हें लगता है कि अंग्रेजी पढ़कर ही सफलता मिलेगी। विद्यालय में भी हिंदी सीखने के लिए अंग्रेजी की सहायता ली जाती है। कितने आश्चर्य की बात है कि अपनी भाषा सीखने के लिए विदेशी भाषा का सहारा लिया जाता है। तो हमारी राष्ट्रीयता कहा है?

देश को आज़ाद करने के लिए स्वतंत्रता आंदोलन गति पकड रहा था तब नेता और साहित्यकार दोनों ने अपना-अपना योगदान दिया। नेताओं ने जो बीड़ा उठाया था देश को आज़ाद करवाने का उनकी योजनाओं को जनता तक भली-भाँति पहुँचाने का कार्य हमारे कवियों ने किया। जिस तरह सीताने रावण के प्रलोभनों को नकारा था देश की जनता ने साहित्य के माध्यम से जागृत होकर असहयोग आंदोलन किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. नंदकिशोर नवल, (2006). स्वतंत्रता पुकारती. साहित्य अकादमी प्रकाशन.

References:

1. Nandkishornaval, (2006). swatantrataPukarati. Sahitya Akadami prakashan

****